LIVE

NET JRF Solutionist

Daily Live 12:00 PM

FILLERFORM LIVE

NTA UGC NET 2022

हिंदी साहित्य(PAPER -2)

इकाई-5

(हिंदी कविता) भाग-4 B

BY JYOTI MA'AM

कबीर पद संख्या – 171 – 180

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers

December 28

Channel created

Channel photo changed

Broadcast

government_job_2020

1,711 Posts

6,845 Followers

7 Followi

Govt job 2020 (Fillerform) 17K

Education Website

Free Online Computer Class

1. Baisc computer

2. Web development

3. Hackig ... more

youtu.be/mIfPC5C-EvQ

Jaipur, Rajasthan

Edit Profile

Promotions | Insights | Contact

New

1 5 K Sub

YouTube

2000 users

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

5000+MCQ+PYQ

Free Books

fillerform

इकाई – V

हिन्दी कविता

पृथ्वीराज रासो – रेवा तट

अमीरखुसरो – खुसरों की पहेलियाँ और मुकरियाँ

विद्यापति की पदावली (संपादक – डॉ. नरेन्द्र झा) – पद संख्या 1 - 25

कबीर – (सं.- हजारी प्रसाद द्विवेदी) – पद संख्या – 160 - 209

जायसी ग्रंथावली – (सं. राम चन्द्र शुक्ल) – नागमती वियोग खण्ड

सूरदास – भ्रमरगीत सार – (सं.- राम चन्द्र शुक्ल) – पद संख्या 21 से 70

तुलसीदास – रामचरितमानस, उत्तर काण्ड

बिहारी सतसई – (सं.- जगन्नाथ दास रत्नाकर) – दोहा संख्या 1 – 50

घनानन्द कवित्त – (सं.- विश्वनाथ मिश्र) – कवित्त संख्या 1 – 30

मीरा – (सं.- विश्वनाथ त्रिपाठी) – प्रारम्भ से 20 पद

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध – प्रियप्रवास

मैथिलीशरण गुप्त – भारत भारती, साकेत (नवम् सर्ग)

जयशंकर प्रसाद – आंसू, कामायनी (श्रद्धा, लज्जा, इड़ा)

निराला - जुही की कली, जागो फिर एक बार, सरोजस्मृति, राम की शक्तिपूजा, कुकरमुत्ता, बाँधो न नाव इस ठाँव बंधु।

सुमित्रानंदन पंत – परिवर्तन, प्रथम रश्मि

महादेवी वर्मा – बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ, मै नीर भरी दुख की बदली, फिर विकल है प्राण मेरे, यह मन्दिर का दीप इसे नीरव जलने दो, द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र

रामधारी सिंह दिनकर – उर्वशी (तृतीय अंक), रश्मिरथी

नागार्जुन – कालिदास, बादल को घिरते देखा है, अकाल और उसके बाद, खुरदरे पैर, शासन की बंदूक, मनुष्य हूँ।

सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय – कलगी बाजरे की, यह दीप अकेला, हरी घास पर क्षण भर, असाध्यवीणा, कितनी नावों में कितनी बार

भवानीप्रसाद मिश्र – गीत फरोश, सतपुड़ा के जगल

मुक्तिबोध – भूल गलती, ब्रह्मराक्षस, अंधेरे में

धूमिल – नक्सलवाड़ी, मोचीराम, अकाल दर्शन, रोटी और संसद

UGC NET Giveaway

Free Books

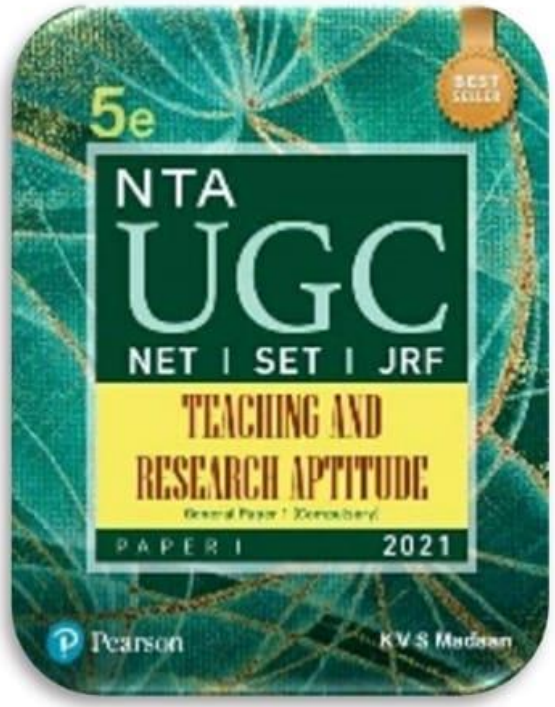

www.ugc-net.com

Fillerform

8209837844

8209837844

www.ugc-net.com

हिंदी कविता

कबीर

(संपादक : हजारी प्रसाद द्विवेदी)

पद संख्या - 171 - 180

8209837844

www.ugc-net.com

कबीर

(संपादक हजारी प्रसाद द्विवेदी) पद संख्या - 160 - 170

1.कबीर एक धर्मोंप्रदेशक, समाज- सुधारक योगी और कवि के साथ-साथ महान भक्ति थे|

2. कबीर फारसी का शब्द है| कबीर का अर्थ महान होता है|

3. कबीर का जन्म विक्रमी संवत 1455 में काशी नामक स्थान पर हुआ था|

8209837844 www.ugc-net.com

4. विक्रमी संवत को ई० में बदलने के लिए 57 से घटाने पर कबीर का जन्म 1398 ईस्वी में हुआ था| (यह प्रमाणित है)
5. कबीर की एक रचना है 'कबीर चरित्र बोध"(इसके रचनाकार अज्ञात है)किस रचना का प्रकाशन डॉक्टर श्यामसुंदर दास में नागरी प्रचारिणी सभा काशी से करवाया था | उसी "कबीर चरित्र बोध " में एक दोहा मिलता है|

8209837844 www.ugc-net.com

6.कबीर का निधन :- 1518 ईस्वी में हुआ था |भक्तमाल की टीका में एक पद मिलता है 'भक्तमाल ै" नाभादास की रचना है|

7. कबीर की रचना बीजक है| इसका संकलन धर्मदास ने किया |

8. बीजक के तीन भाग है- साखी, शब्द, रमैनी |

1.साखी :- 'साखी ' साक्षी शब्द का (तद्भव) बदला हुआ रूप है | जिसका अर्थ होता है| ' प्रत्यक्ष ज्ञान' अर्थात जो ज्ञान सबको दिखाई दे | 'साक्षी' के 59 भाग है| पहला अंग 'गुरुदेव को भंग' है और अंतिम 'अबीहड़ को अंग ' है |

8209837844 www.ugc-net.com

2. शबद :- इसके 23 भाग हैं यह गेय पद है | इसमें उपदेशात्मक के स्थान पर भाव की वाक्य प्रधानता होती है| इसमें योगसाधना और कीर्तन संबंधित बातें हैं| भाषा ब्रज / पूर्वी बोली है|

3. रमैनी:- इसके 47 भाग हैं यह चौपाई छंद में लिखी गई है इसमें कबीर के दार्शनिक विचार हैं -आत्मा, परमात्मा, मोह ,माया आदि क्या है?

8209837844 www.ugc-net.com

कबीर का जन्म काल विभिन्न विद्वानों के अनुसार

1.'बिल' ने इनका जन्मकाल 1490 ई० माना है|
2. 'फर्कुहर' ने 1400-1518 ईस्वी तक माना है |
3. 'मेकॉलिफ' ने 1300-1420 ई० माना है |
4. 'बेसकत' और ' सि्मथ ' ने 1400 से 1580 माना है |
5. हंटर ने 1300-1400 माना है|
6. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ,डॉ रामकुमार वर्मा , हजारी प्रसाद द्विवेदी और श्यामसुंदर दास इन चारों ने कबीरदास जी का जन्म 1398-1518 माना है |(सर्वमान्य है)

8209837844

www.ugc-net.com

पद: 171

बहुविध चित्र बनाय कै, हरि रच्यौ क्रीडा-रास।
जेंहि न इच्छा झुलिवे की, ऐसी बुधि केहि पास।।
झुलत-झुलत बहु कलप बीते, मन न छोड़े आस।
रचि हिंडोला अहो-निसि हो चारि जुग चौमास।।
कबहुँ ऊँचसे नीच कबहूँ, सरग-भूमि ले जाय।
अति भ्रमत भरम हिंड़ोलवा हो, नेकु नहिं ठहराया।।
डरत हौं यह झूलबे को, राखु जादवराय।
कहै कबीर गोपाल बिनती, सरन हरि तुअ पास।।

8209837844 www.ugc-net.com

पद: 172

चली मैं खोजमे पियकी। मिटी नहीं सोच यह जियकी।।
रहे नित पास ही मेरे। न पाऊँ यार को हेरे।।
बिकल चहुँ ओरको धाऊँ। तबहुँ नहिं कंतको पाऊँ।।
धरो केहि भाँतिसो धीरा। गयौ गिर हाथ से हीरा।।
कटी जब नैन की झांई। लख्यौ तब गगनमें साईं।।
कबीरा शब्द कहि त्रासा। नयन में यारको बासा।।

8209837844 www.ugc-net.com

पद: 173

तलफै बिन बालम मोर जिया।
दिन नहिं चैन रात नहिं निंदिया, तलफ तलफके भोर किया।
तन-मन मोर रहंट-अस डोलै, सून सेज पर जनम छिया।
नैन चकित भए पंथ न सूझै, साईं बेदरदी सुध न लिया।
कहत कबीर सुनो भइ साधो, हरो पीर दुख जोर किया।

8209837844 www.ugc-net.com

पद: 174

अबिनासी दुलहा कब मिलिहौ, भक्तन के रछपाल॥टेक॥
जल उपजल जल ही से नेहा, रटत पियास पियास।
मैं बिरहिनि ठाढ़ी मग जोऊँ, प्रीतम तुम्हरी आस॥1॥
छोड़्यो गेह नेह लगि तुमसे, भई चरन लौलीन।
तालाबेलि होत घट भीतर, जैसे जल बिन मीन॥2॥
दिवस न भूख रैन नहिं निद्रा, घर अँगना न सुहाय।
सेजरिया बैरिनि भइ हमको, जागत रैन बिहाय॥3॥
हम तो तुम्हरी दासी सजना, तुम हमरे भरतार।
दीनदयाल दया करि आओ, समरथ सिरजनहार॥4॥
कै हम प्रान तजतु हैं प्यारे, कै अपनी करि लेव।
दास कबीर बिरह अति बाढ़्यो, अब तो दरसन देव॥5॥

8209837844 www.ugc-net.com

पद: 175

नैना अंतरि आव तू, ज्यूं हौं नैन झंपेउ।
ना हौं देखूं और कूं, नां तुझ देखन देऊँ।
कबीर रेख सिन्दूर की काजल दिया न जाई।
नैनूं रमैया रमि रहा, दूजा कहाँ समाई ।
मन परतीति न प्रेम-रस, ना इस तन में ढंग।
क्या जाणौ उस पीव सूं कैसी रहसि संग।।"

8209837844 www.ugc-net.com

पद: 176

नैंनो की करि कोठरी, पुतली पलंग बिछाय।
पलकों की चिक डारि कै, पिय को लिया रिझाय।।1।।
प्रियतम को पतिया लिखूं, कहीं जो होय बिदेस।
तनमें, मनमें, नैनमें, ताकौ कहा संदेस।।2।।

8209837844 www.ugc-net.com

पद: 177

अँखियाँ तो झांई परी, पंथ निहारि-निहारि।
जीभड़ियाँ छाला पड़्या, राम पुकारि-पुकारि।
विरह कमंडल कर लिये वैरागी दो नैन ।
माँगै दरस मधूकरी छके रहैं दिन रैन ॥
सब रंग तात रबाब तान, विरह बजाबै नित्त और न कोई सुनि सकै, कै साईं कै चित्त ।

8209837844 www.ugc-net.com

पद: 178

पछा पछीके कारनै, सब जग रहा भुलान।
निरपछ हैंकै हरि भजै, सोई सन्त सुजान।।1।।
अमृत केरी मोटरी, सिरसे धरी उतार।
जाहिं कहौ मै एक है, मोहि कहै दो-चार।।2।

8209837844 www.ugc-net.com

पद: 179

दुलहिनि तोहि पियके घर जाना।
काहे रोवो काहे गावो काहे करत वहाना।।
काहे पहिरयौ हरि हरि चुरियाँ पहिरयौ प्रेम कै बाना।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बिन पिया नहिं ठिकाना।।

8209837844

पद: 180

www.ugc-net.com

सूतल रहलूँ मैं नींद भरि, पिया दिहलै जगाय।
चरन-कँवलके अंजन हो नैना ले लूँ लगाया।।
जासो निंदिया न आवे हो नहि तन अलसाय।
पियाके वचन प्रेम-सागर हो, चलूँ चली हो नहाय।।
जनम जनमके पापवा छिनमे डारब धोवाय।
यहि तनके जग दीप कियौ प्रीत बतिया लगाय।।
पाँच ततके तेल चुआए व्रह्म अगिनि जगाय।
प्रेम-पियाला पियाइके हो पिया पिया बौराय।।
बिरह अगिनि तन तलफै हो जिय कछु न सोहेय।।
ऊँच अटरिया चढ़ि बैठ लूँ हो जहँ काल न जाय।
कहै कबीर विचारिके हो जम देख डराया।।

धन्यवाद....

For More Information

8209837844

www.ugc-net.com

/Fillerform /Fillerform /Fillerform

info@fillerform.com